Summary of the Minor Research Project

Dr. Roshani Chhaganlal Pawar

Hindi Department

आधुनिक खंडकाव्यों में सामाजिक मूल्य

Objectives of the Project - **परियोजना का उद्देश्य**

1) आधुनिक खंडकाव्यों के सामाजिक मूल्यों के द्वारा समाज में स्वस्थ दृष्टिकोण निर्माण करना।

2) आधुनिक खंडकाव्यों के सामाजिक मूल्यों से भावी पीढी में उच्चादर्शों के भावों और संस्कारों को पल्लवित और पुष्पित करना।

3) आधुनिक खंडकाव्यों को मानव जीवन कल्याण हेतु उपाद्येय सिद्ध करना।

Whether Objectives were Achieved – उद्देश्य

हॉ, ' आधुनिक खंडकाव्यों में सामाजिक मूल्य ' इस लघु परियोजना का उद्देश्य सामाजिक मूल्यों के द्वारा समाज में स्वस्थ दृष्टिकोण निर्माण करना रहा। आधुनिक खंडकाव्यों का अलग–सा महत्त्व है गागर में सागर भरने की क्षमता खंडकाव्य में होती है। आधुनिक युग के खंडकाव्य की सबसे उल्लेखनीय विषेशता उनमें अंतनिर्हित सामाजिक मूल्य है। खंडकाव्यों में कम शब्दों में व्यापक विषय की पुष्टि होती है। इसीलिए इसे कम समय में ज्यादा –से–ज्यादा लोग पढकर आनंद प्राप्त करते हैं। मानव में उदात्त विचारों का परिष्कार होता है। जो जीवन को सफल बनाने में सहायक सिद्ध होता है और सामाजिक मूल्यों को निरंतर विकसित करता है। आज समाज में अनेक विकृतियॉ पनपती जा रही हैं – जैसे –कन्याभ्रूण–हत्या, किसानों की आत्महत्या, छात्रों की आत्महत्या, नशाखोरी, खून–खराबा, आतंकवाद, आपसी मतभेद, भ्रष्टाचार, नारी शोषण इन समस्याओं के समाधान के लिए समाज में सामाजिक मूल्यों की नितांत आवश्यकता महसूस हो रही है, जिसमें दया, प्रेम, सहानुभूति, भ्रातृत्त्व–भाव, परोपकार की वृत्ति इन बातों का समाहार होता है। मानव को इन सामाजिक मूल्यों के पोषण से संवेदनशील बनाकर ही स्वस्थ समाज की निर्मिति संभव हो सकती है। इस दृष्टि से मैंने आधुनिक कवि नरेंद्र शर्मा के द्रौपदी, उत्तरजय खंडकाव्य और नरेश मेहता के संशय की एक रात, महाप्रस्थान, प्रवाद–पर्व, शबरी आदी आधुनिक खंडकाव्यों को लघु परियोजन के लिए चयनित किया है। इन खंडकाव्यों से ऐसे सामाजिक मूल्य निर्मित होते हैं जो समाज को एकसूत्र में बांध सकें तथा स्वस्थ समाज का निर्माण करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। जिससे मानव को शाश्वत आनंद की अनुभूति होती है। ऐसे सामाजिक मूल्य जो समाज को विकसित तथा स्वस्थ बनाने के लिए सहायक है। इसके लिए आधुनिक खंडकाव्य उपादेय सिद्ध हो सकते हैं।

Achievment form the Project – परियोजना से उपलब्धियॉ

'आधुनिक खंडकाव्यों में सामाजिक मूल्य' इस परियोजन में सामाजिक मूल्य को उजागर करने का सफल प्रयास किया है। प्रस्तुत परियोजन को अपनी ओर से न्याय देने का सफल प्रयास मैंने किया है। आशा करती हूँ कि यह परियोजन भविष्य में इसप्रकार सार्थक सिद्ध हो सकें –

1) साहित्य में खंडकाव्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। खंडकाव्य में गागर में सागर भरने की क्षमता होती है। इसलिए इसे कम समय में ज्यादा से ज्यादा लोग पढकर आनंद प्राप्त कर सकते हैं। खंडकाव्य पौराणिक या ऐतिहासिक कथा के छोटे–छोटे अंश को लेकर लिखे जाते हैं पाठकों को खंडकाव्य के महत्त्व से परिचित कराने के लिए खंडकाव्य के स्वरूप तथा तत्त्वों का विवेचन किया गया है। खंडकाव्य की महत्ता मूल्य के कारण भी प्रतिपादित होती है। सामाजिक मूल्य जीवन को दिशा दिखाने का काम करते हैं। यह परियोजन ऐसे सामाजिक मूल्य से पाठक को अवगत करना रहेगा।

2) इस परियोजन में मानव का कल्याण करने वाले सामाजिक मूल्यों से पाठक तथा शोधकर्त्ताओं को अवगत कराने के लिए सामाजिक मूल्य की परिभाषा, स्वरूप इनका विवेचन करके मानव को हांड–मांस का संवेदनशील मनुष्य बनाया जा सकता है। तथा अवगुणों के कारण मूल्यों का विघटन होता है जिसमें मानव दानव या राक्षस बन जाता है। अतः परिवार, समाज, राष्ट्र, देश की स्थिति को स्वस्थ, खुशहाल बनाने के लिए सामाजिक मूल्यों की सार्थकता से पाठक, शोधार्थी को परिचित कराना रहेगा।

3) इस परियोजन में व्यक्त सामाजिक मूल्य आज देश में उत्पन्न अनेक विकराल समस्याओं के कारण देश की जो दुर्दशा हो चुकी है उसे दूर करके भाईचारा, एकता, भातृत्त्व भाव जैसे सामाजिक मूल्यों का प्रचार–प्रसार करने में सहायक सिद्ध होंगे। अतः मानवीय मन का परिष्कार करने में आधुनिक खंडकाव्यों का विशिष्ट योगदान रहा है। आधुनिक कवि सामाजिक एकता के सजग प्रहरी है। उन्होंने समाज में बुराइयों का विरोध तथा मानव मन के परिष्कार की भरपूर कोशिश की। आज का युग विज्ञान का युग है और बडा खतरा वैचारिक प्रदूषण के कारण मानव संवेदनहीन होता जा रहा है। समाज हिंसा तथा आतंक से ग्रस्त है। ऐसी स्थिति में परिवर्तन लाने में सामाजिक मूल्य ही सशक्त माध्यम है। इसी सामाजिक मूल्यों के कारण आधुनिक समाज में आधुनिक खंडकाव्य के अध्यापन का महत्त्व और भी बढ जाता है। आधुनिक खंडकाव्य का अध्ययन करने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि आधुनिक खंडकाव्य हमें वह जीवन दृष्टि प्रदान कर सकता है। जिसे अपनाकर हम विकारों से मुक्त हो सकते हैं और अपने कलुषित मन का परिष्कार कर सकते हैं। आधुनिक खंडकाव्यों में व्यक्त सामाजिक मूल्य सार्वकालिक है। अतः कहा जा सकता है –

झगडे की जडे सिंचित होती हैं, अविचारित वाणी से

सौहार्द का पौधा पनपता है, श्रद्धा प्रेम के पानी से।

इसप्रकार आधुनिक खंडकाव्य में सामाजिक मूल्य इस परियोजन का प्रमुख उद्देश्य समाज में स्वस्थ दृष्टिकोण निर्माण करना है। भावी पीढी में उच्चादर्शों के भावों और संस्कारों को पल्लवित और पुष्पित करना है। यह परियोजन मानव जीवन कल्याण हेतु उपादेय रहेगा। मानव जीवन के अमानवीय एवं संकुचित बिंदुओं, पक्षों को दूर करने का भरसक प्रयत्न है। विश्वास है हिंदी प्रबुद्ध एवं परम विद्वानों के लिए, समाज के लिए, हिंदी छात्रों के लिए यह परियोजन नई दिशा देने हेतु सक्षम रहेगा। मैंने अपनी ओर से इस शोध कार्य को न्याय देने का भरसक प्रयास किया है। आशा है कि पाठक इस परियोजन से संतुष्ट होंगे।

उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगांव तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में शनिवार 19 मार्च 2016 को ' हिंदी साहित्य शोध अनुसंधानः आधुनातन आयाम ' इस विषय पर आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशााला में ' संशय की एक रात ' खंडकाव्य सामाजिक मूल्य से आधुनातन आयाम की ओर ' इस विषय पर शोध निबंध प्रस्तुत किया।

Summary of the Findings – सारांश निष्कर्ष

प्रस्तुत परियोजन को दो अध्यायों में विभक्त किया गया है–

प्रथम अध्याय का शीर्षक है – 'खंडकाव्य और मूल्य परिचय।' जिसमें खंडकाव्य का स्वरूप , खंडकाव्य के तत्त्व, मूल्य शब्द की व्युत्पत्ति, मूल्य की परिभाषा, मूल्य का स्वरूप, मूल्य के प्रकार आदी विश्लेषित किए गए हैं।

साहित्य में खंडकाव्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आधुनिक खंडकाव्य ऐतिहासिक या पौराणिक कथा के छोटे–छोटे अंश को लेकर लिखे जाते हैं। इन खंडकाव्यों में गागर में सागर भरने की क्षमता निहित है। खंडकाव्य के स्वरूप तथा तत्त्वों से उसकी विराटता के दर्शन होते हैं। आधुनिक खंडकाव्यों में मूल्य दर्शन होने के कारण सामाजिक मूल्यों की गरिमा बढती है। इसीलिए मूल्यों की व्युत्पत्ति, परिभाषा, स्वरूप, प्रकार आदि की चर्चा की गई है। क्योंकि मूल्यों से आधुनिक खंडकाव्यों का गहरा संबंध है। मूल्य मनुष्य द्वारा निर्मित कसौटी है जिससे साहित्य की परख की जाती है। मूल्ययुक्त साहित्य द्वारा मानव–सभ्यता जीवित रहती है। मूल्य आधुनिक खंडकाव्यों को उत्कृष्टता प्रदान करते हैं। आधुनिक खंडकाव्य चिरंतन मूल्यों को अपने में समाहित कर पाने में सफल रहा है। जिसके कारण आधुनिक खंडकाव्य स्थायी, शाश्वत और उपादेय बन गए हैं।

द्वितीय अध्याय का शीर्षक है – 'आधुनिक खंडकाव्य में सामाजिक मूल्य' जिसमें सामाजिक मूल्य की परिभाषा, स्वरूप आदि पर विचार तथा चिंतन किया गया है। आधुनिक युग की इस आपाधापी में मूल्यों का स्वरूप निरंतर बदलता जा रहा है। जिसके कारण मानव संवेदनहीन बनता जा रहा है। अतः मानव को संवेदनशील बनाने के लिए सामाजिक मूल्यों की नितांत आवश्यकता है यह दृष्टि आधुनिक खंडकाव्यों जैसे– द्रौपदी, उत्तरजय, संशय की एक रात, महाप्रस्थान, प्रवाद –पर्व, शबरी जैसे खंडकाव्यों में उजागर होती है।

इस अध्याय में खंडकाव्यों के पात्रों के व्यक्तित्त्व का विकास, जीवन और समरसता के बारे में दृष्टिकोण, पात्रों का सामाजिक दायित्त्व एवं मूल्य, व्यक्ति चेतना और सामूहिकता इन मुद्दों पर अनुसंधान किया गया है।

आधुनिक युग में समाज के अनेक क्षेत्र में निरंतर और तेजी से परिवर्तन हो रहा है। इसमें सबसे अहं भूमिका विज्ञान अदा कर रहा है। विज्ञान के कारण उन्नति के कवाड खुलते जा रहे हैं। जिससे मानव प्रगतिपथ पर अग्रसेर हो रहा है। सही मायने में इसके अत्यधिक प्रभाव के कारण उसकी अधोगति हो रही है। मानव का शारीरिक, मानसिक, नैतिक स्वास्थ बिगडता जा रहा है। वह एकाकी, अकेला तथा संवेदनहीन हो गया है। इसके परिणाम स्वरूप आज वह अपने देश, राष्ट्र, समाज, परिवार यहॉ तक कि अपने आपसे टूटता जा रहा है। वह हाड–मॉस का जीवंत मनुष्य नहीं बल्कि यांत्रिक बन चुका है। इसीलिए समाज में अनेक विकृतियॉ पनपती जा रही हैं– कन्याभ्रूण–हत्त्या, किसानों की आत्महत्त्या, आपसी भेदभाव की प्रवृत्ति, आतंकवाद, बलात्कार आदि समस्याऍ दिन–प्रतिदिन विकराल रूप धारण कर रही हैं। इन समस्याओं के समाधान के लिए समाज में सामाजिक मूल्यों की जरूरत महसूस हो रही है। जिसमें दया,माया, प्रेम, सहानुभूति, भ्रातृत्त्व–भाव, परोपकार की वृत्ति आदि गुण आते हैं। इन

गुणों के पोषण से मनुष्य को संवेदनशील बनाया जा सकता है। जो स्वस्थ समाज के निर्माण में सहायक हो सकते हैं। ऐसे सामाजिक मूल्यों की दृष्टि से आधुनिक खंडकाव्य उपादेय सिद्ध होते हैं। जिसमें प्रधान पात्रों के व्यक्तित्त्व के विकास से बताया गया है कि व्यक्तित्त्व मानव के आंतरिक गुणों से बनता है। अच्छे गुणों के कारण उसकी अंतरात्मा में उदारता का भाव जाग्रत होता है। जिसके द्वारा समाज के विकास के साथ अनायास ही व्यक्ति का स्वयं का व्यक्तित्त्व विकसित हो जाता है जिसके फलस्वरूप उसका कार्य और व्यक्तित्त्व असाधारण कोटि का बन जाता है। आधुनिक खंडकाव्यों में पात्रों के व्यक्तित्त्व के कारण सामाजिक मूल्य विकसित करने के लिए पोषण मिलता है। आधुनिक खंडकाव्यों में पात्रों के माध्यम से जीवन में समरसता वाला दृष्टिकोण भी दिखाई देता है। खंडकाव्यों का लक्ष्य जीवन को विकसित करने के साथ परमोच्च आनंद की प्राप्ति करना रहा है। जीवन में प्रत्येक मनुष्य आनंद प्राप्त करना चाहता है। यह आनंद चिरस्थायी हो जो व्यक्ति के साथ–साथ समाज में स्वस्थ वातावरण की निर्मिति कर सके। जीवन के प्रति ऐसी समरसता वाली दृष्टि आधुनिक खंडकाव्यों में नजर आती है। आधुनिक खंडकाव्यों में पात्रों के सामाजिक दायित्त्व एवं मूल्यों का भी विवेचन किया गया है। इसमें प्रेम, त्याग, समर्पण, एकनिष्ठता, भ्रातृत्त्व–भाव, सर्वधर्मसमभाव, वसुधैव कुटुंबकम् आदि सामाजिक मूल्यों को उजागर किया गया है। जिसमें प्रतिनिधि पात्रों की गरिमा उदात्त कोटि का स्थान प्राप्त करती है। खंडकाव्यों में व्यक्तिचेतना, सामूहिकता को बल और शक्ति प्रदान करती है। जिसके कारण समाज में एकता, भाईचारे की भावना पनपती है। किसी भी कवि की रचना जब व्यक्तिचेतना से ऊपर उठकर सामूहिकता या समष्टि के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेती है तभी वह रचना श्रेष्ठ मानी जा सकती है। आधुनिक खंडकाव्यों में सारी बातें सामाजिक मूल्यों को उजागर करती हैं। आधुनिक खंडकाव्यों में प्रतिपादित सामाजिक मूल्यों के कारण व्यक्ति, घर, परिवार, समाज में स्वस्थ तथा आनंदमय वातावरण की निर्मिति होती है। सामाजिक मूल्य ही समाज को विकसित करने वाले सच्चे अर्थों में मानदण्ड है।

उपसंहार में समग्र परियोजन के निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि व्यक्ति को नैतिकता और सन्मार्ग की ओर बढाने के लिए तथा व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, देश की उन्नति तथा स्वस्थ दृष्टिकोण निर्माण करने के लिए सामाजिक मूल्य अक्षयनिधि हैं। वे हर काल, हर वर्ग और प्रत्येक समाज के लिए उपयोगी और अनुकरणीय हैं।

Contribution to the Society – समाज में योगदान

साहित्य के मूल में समाज होता है। समाज की उन्नति तथा समाज में स्वस्थ दृष्टिकोण निर्माण करने के लिए सामाजिक मूल्य अहं भूमिका निभाते हैं। समाज में फैली विकराल प्रवृत्तियों को नष्ट करके उसके स्थान पर सद्प्रवृत्तियों का पोषण करने के लिए सामाजिक मूल्य महत्त्वपूर्ण होते हैं। आधुनिक खंडकाव्यों के मूल में दया, माया, प्रेम, सहानुभूति, परोपकार, भातृत्त्व –भाव जैसे सामाजिक मूल्यों को पोषण मिला है। जो समाज की उन्नति का परिचायक माना जा सकता है। सामाजिक मूल्य ही समाज की जीवंतता के परिचायक है। मेरा लघु परियोजन का शीर्षक ' आधुनिक खंडकाव्यों में सामाजिक मूल्य' समाज में स्वस्थ दृष्टिकोण निर्माण करने में सहायक सिद्ध होगा। इस विषय को लेकर राष्ट्रीय कार्यशाला में शोध निबंध प्रस्तुत किया है जो समाज को नई दिशा दिखाने में लाभदायी तथा प्ररेणादायी हो सकता है।